तड़प

मध्यप्रदेश के दक्षिण –पूर्व में आदिवासी इलाका सरगुजा है।घने जंगलों से आच्छादित पर्वत श्रेणियाँ अपने भीतर कोयले की खानें समेटे हुए हैं।नीला के पिता के जिगरी दोस्त काशीनाथ वहीं एक खाान में अच्छी पदवी पर कार्यरत थे।वह सपरिवार जब कभी दिल्ली जाते तो उनका पत्र आ जाता कि शहडोल गाड़ी रूकेगी ,आप सब स्टेशन पर मिलने आना और नीला का परिवार खुशी –खुशी नियत समय पर मिलने पहुँच जाता।वे सदा आग्रह करते कि आप सब हमारे पास कभी आइये ,आपको कोयले की खानें दिखाएंगे।सो इस बार गर्मी की छुट्टियों में नीला के पिताजी ने बच्चों व इनकी माँ का प्रोग्राम वहीं का बना दिया।तब फोन का चलन नहीं था।काशीनाथ जी को उनके पहुँचने की तार भेज दी गई।शहडोल से मनेन्द्रगढ़ पहुँचकर गाड़ी चार घंटे वहाँ रूकती थी।बिलासपुर से दूसरी गाड़ी के आने पर उसमें वो बोगी अटैच की जाती थी।**1960** के आसपास का जमाना था।सीधी रेल्वे लाईन व यातायात की असुविधा के कारण गाड़ी सुबह छैः बजे कोरबा पहुँची।सामने पहाड़ों से घिरा होने के कारण रेल्वे लाईन वहीं समाप्त हो जाती थी।सवारियों के नाम पर अधिकतर आदिवासी औरतें लाल, हरी, नीली छींटदार धोती पहने व मर्द मैली –कुचैली अवस्था में थे।नीला को तो यह दुनिया ही अजीब लगी।स्टेशन के नाम पर वहाँ चढ़ाई के पास पगडंडीनुमा रास्ते के करीब एक टी.टी.बाबू खड़े मिले।फर्स्ट– क्लास के डब्बे से उतरे कुछ यात्रियों से टिकट एकत्र कर रहे थे।चारों ओर नज़र घुमाने से टीलों के ऊपर पहाड़ियाँ और उन पर जाती पगडंडियाँ दिखाई देती थीं।रेलगाड़ी से उतरे यात्री चारों ओर उन्हीं पगडंडियों पर बिखरे छींट की तरह लग रहे थे।या फिर भूरे और हरे धानी खेत पर खिले लाल – पीले फूल।

तभी इन सबकी नज़र सामने आते राजन ,छोटे भाई जिमी और काशीनाथ अम्कल पर पड़ी।कुलियों ने छोटे– छोटे दो अटैची व बैग उठाए व औपचारिक मेल– मिलाप के बाद सब उनके साथ चढ़ाई चढ़ने लगे।पहाड़ी पर शहर बसा था, वहीं जाना था।बीच रास्ते में हरियाली के मध्य सुरंगनुमा दो बड़े अर्द्धगोलाकार दरवाजे दिखाई दिए।राजन ने बताया ये सुरंगों के रास्ते पहाड़ी के नीचे बिछी कोयले की ख़ानों के हैं।तब तक सबके जूते व चप्पलें कोयले की काली मिट्टी से पैरों व कपड़ों को काले कर चुके थे।एक फर्लांग की चढ़ाई और चढ़ने पर ढलान पर पहले बंगले पर ही काशीनाथ जी की नेम– प्लेट लगी थी।सामने आण्टी व तृषा खड़ी थीं।बहुत ही प्यार व आदर से उन्होंने सबका आतिथ्य किया।नीला को वहाँ की प्राकृतिक छटाओं का सौन्दर्य सम्मोहित कर रहा था।चारों ओर फूलों से लदी क्यारियाँ , घर पर चढ़कर मुस्काती गुलाब की बेलें और दायीं ओर कटहल के भारी फलों से लदे बोझिल ढेरों पेड़ ,साथ ही पपीतों का झुरमुट— सभी मन को लुभा रहे थे।उसी के आगे विभिन्न सब्जियों की ढेरों क्यारियाँ।बाईं ओर चौकीदार की कोठरी ; जिसमें से उसके बीवी –बच्चे उत्सुकता वश किवाड़ के पीछे से झाँक रहे थे।घर में केवल एक धोती से शरीर ढाँपे—किसी कलाकार की पेटिंग से बाहर निकली जैसी एक नौकरानी।सो सब कुछ यहाँ अलग– अलग सा लग रहा था।

दोपहर खाने के बाद जेठ की कड़कती दोपहरी में सभी आराम से भीतर लेटकर गप– शप करने लगे, तो नीला अपनी इंगलिश की पुस्तक ले बाहर किचन – गार्डन में जा बैठी।उसका कॉलेज का प्रथम वर्ष पूरा हो चुका था।सो वो भविष्य की तैयारी में लगी हुई थी।पुस्तक तो हाथों में नाम मात्र को ही

 ©Veena Vij - Tadap - Susha.doc

थी; वो तो पेड़ों के झुरमुट में ऐसी बैठी –मानो एक मुद्दत बाद उसे चैन मिला हो।बेहद खुश थी कि शहर से दूर वो यहाँ प्रकृति के करीब आ गई।यहाँ गर्मी भी नाम मात्र को ही थी।तभी अचानक पीछे आहट सुन – उसने जो पीछे देखा तो वहाँ राजन को खड़े मुस्कुराते पाया।आँखों में मस्ती लिए हुए एक आर्कषक मुस्कान।सजीला , गठीला बदन ,गोरा रंग व गालों पर हल्की गुलाबी आभा! बेहद आकर्षण था उसके व्यक्तित्व में।तेईस वर्ष के करीब था।नीला ने तो अभी जवानी की दहलीज पर पाँव रखा ही था सोलहवाँ वर्ष पूरा करके।इससे पूर्व दोनो ने एक – दूसरे को एक बार दिल्ली जाते हुए शहडोल स्टेशन पर देखा था।राजन के हाथ में चॉक का एक टुकड़ा था, उसने रेल के डिब्बे के बाहर यूं ही एक औरत की बहुत सुन्दर स्कैच बनाई।उसका चित्रकारी में रूझान व हाथ की कारीगरी देखकर नीला तो उसी क्षण उससे प्रभावित हो गई थी।तभी दोनो की दृष्टि में मूक आदान– प्रदान हुआ था; अलबत्ता बात नहीं हुई थी।आज— अचानक दोनो एक– दूसरे के सामने थे।शायद कुछ कहने को !

खैर, वहीं पड़ी एक खाली कुर्सी पर वो बैठ गया, हैरानी से पूछने लगा कि सब भीतर सो रहे हैं वो अकेली यहाँ क्यों आ गई?प्रत्युत्तर में नीला ने भी उससे यही कहा।अपनी झेंप मिटाते हुए राजन झट सफाईगोशी में बोला कि वो उसे भीतर कहीं दिखाई नहीं दी तो उसे ढूंढता वो भी यहीं आ गया था।नीला ने पढ़ने का बहाना बनाते हुए बताया कि वो पढ़ने आई थी ;एवम् किताब पढ़ने लग गई ।राजन ने कुछ न कहते हुए अपलक उसे निहारना आरम्भ कर दिया।टकटकी बँधी नज़र नीला को आँख की कोर से तंग कर रही थी।वो ज्यूंही नज़र उठाकर ऊपर देखती, राजन झट इधर –उधर देखने का बहाना करने लग जाता।इस पर नीला भी धीमे से मुस्कुराकर नीचे मुँह कर लेती।अचानक ही नीला धत! कहकर उठी और भीतर की ओर भागी।सीधे जाकर शीना और मीता दोनो बहनो के मध्य लेट गई।उसकी साँस जोर– जोर से चल रही थी।दोनो हाथों से मुँह ढाँपकर वो खुली पलकों में मुस्कुराने लगी। उसका रोम–रोम सिहर उठा था।उसने आँख पर से एक उंगली उठाकर देखा— राजन भीतर आया और फ्रिज में से पानी निकालने के बहाने उसे ही देखे जा रहा था।वो यूं निश्चल हो गई, मानो सो गई हो।उसकी सोच उसे एक नए सिलसिले की शुरूआत की ओर ले जा रही थी; इस सोच में डूबी वो सचमुच ही नींद की गोद में समा गई।

शाम को शीना ने उठाया ,दीदी! उठो। सब घूमने चल रहे हैं।’अल्साई सी अंगड़ाई ले नीला उठी।जाकर आईने में चेहरा देखा, आज वो स्वंय से ही शरमा गई।तैयार हो सब निकलने लगे तो साँझ गहरी हो चली थी।चढ़ाई चढ़ते ऊपर की ओर जंगल था।बंगलों से आती टिमटिमाती रोशनी दूर से दिखाई देती थी।दूर से आती सियार की हूं. .हूं. .की आवाज़ भी सुनाई दे रही थी।दूर. . .झोपड़ियों के झुंड से हल्की रोशनी व ढम–ढम की आवाजें भी कानों में रस घोल रही थीं।शायद वहाँ वो आदिवासी अपनी दिन भर की थकान नाच कर मिटा रहे थे।कुल मिलाकर एक फिल्मी सीन लग रहा था।नई दुनिया, नए अनुभव! थोड़ी दूर टहलकर गप– शप करते सब वापिस आ गए।रात, खाने के बाद लॉन में सबके सोने के लिए खाटें बिछी थीं।एक कोने में टेबल लैम्प जलाकर टेबल व चार कुर्सियां रखी हुई थीं।राजन व तृषा वहाँ पढ़ने बैठे, नीला भी अपनी किताब उठा वहीं जा बैठी।राजन ने कनखियों से उसे आते देखा।आने पर उसकी पुस्तक उठा कर देखने लगा कि देखें वो क्या पढ़ रही है।तभी नीला को पैरों पर कुछ रेंगता सा महसूस हुआ।उसने झट चौंक कर टेबल के नीचे झांका तो राजन के पांव को अपने पांव पर हौले – हौले सहलाता पाया।वो एकदम से काँप गई।एक नई सिहरन. . .पाँवों से उठी कँपकँपी सिर को झटक गई।कुछ घबराते हुए या न चाहते हुए भी वो पाँव को हटाने की व्यर्थ चेष्टा

करती रही। लेकिन राजन !वो कहाँ मानता था?नीला पर उस स्पर्श का नशा सा छाता जा रहा था। कि तभी तृषा ने कहा, 'चलो दीदी हम चलकर सोते हैं; भैया तो अभी देर तक पढ़ेंगे।'नीला ने चुपचाप अपना पाँव खींचा और झट जाकर बिस्तर पर लेट गई। जवानी की दहलीज पर पाँव रखते ही नीला ने आज जो अनुभव किया था वह उससे घबरा भी रही थी पर उसे कुछ अच्छा भी लग रहा था। तभी उसने देखा राजन भी उठकर अपने बिस्तर पर लेट गया था। नीला के मुख पर चाँद की किरणें दुधिया चाँदनी बिखेर रही थीं। नीला ने राजन को अपनी ओर टकटकी लगाए निहारते देखा तो वो मानिनी बनी मुस्कुरा दी व एकदम करवट लेकर दूसरी ओर पलट गई और फिर न जाने कब सो गई।

अगली सुबह नहाते समय राजन के ख्यालों में डूबी वह बाथरूम में कोई गीत गुनगुना रही थी कि रोशनदान से एक कंकड़ भीतर आकर गिरा। ।वह एकदम चुप हो गई। फिर एक के बाद एक ,तीन चार कंकड़ आए। नीला नहा चुकी थी। उसने धीरे से दरवाजा खोल पिछवाड़े जाकर झाँका तो वहाँ राजन को खड़े पाया। अचानक नीला को सामने देख राजन के हाथ का कंकड़ हाथ में ही रह गया। उसने शरारत से नीला को आँख मारी। नीला वहाँ से शरमा कर भागी व राजन मुस्कुराता हुआ खड़ा रहा।

दस बजे कोयले की खाने देखने जाने का प्रोग्राम था। अंकल को ऑफिस छोड़कर जीप वापिस आ चुकी थी। सो सभी बैठे व दस मिनिट में जीप उन्हीं अर्द्धगोलाकार दरवाजों के पास पहुँच गई जो स्टेशन से आते समय रास्ते में दिखे थे। उसके भीतर छोटी– छोटी रेल्वे लाईनों का जाल बिछा था। वहीं एक खुली ट्राली में बैंच लगे थे। उसी ट्राली में सब बैठ गए। राजन वहीं काम करता था, वह आकर ड्राइवर की सीट पर बैठ गया। साथ वाली सीट पर नीला व मीता यूं ही पहले से बैठी हुई थीं। बटन दबाते ही त्राली भीतर की ओर चल पड़ी। भीतर की दुनिया ही निराली थी। ढेरों सुरंगें व अंधेरा ही अंधेरा। दीए जैसे टिमटिमाते बल्ब बीच –बीच में नज़र आए। ऊपर पहाड़ से दोनो तरफ पानी रिस रहा था। कूप अंधेरा होने से हाथ को हाथ सुझाई नहीं देता था। राजन अंधेरे का फ़ायदा उठा कर कभी नीला का हाथ कस कर पकड़ लेता तो कभी उसकी पीठ पर हाथ ले जाकर उसे जकड़ लेता। नीला पत्ते की तरह काँपने लगती। कभी ट्राली को ऐसा मोड़ देता कि सब डर के चीखने लगते और ऐसे में वो नीला को अपने साथ चिपका लेता। अंधेरे ने वो काम किया जो उजाले शरमाकर भी न कर पाते। काफी अंदर जाकर जब ट्राली रूकी तो सबने चैन की साँस ली। इधर नीला लाज के मारे नज़रें ऊपर ही नहीं उठा पा रही थी। खैर , देखा कि भीतर बहुत तेज रोशनी व कोयले के चूरे से भरी ज़मीन थी। राजन गाईड था उस समय। समझा रहा था कि कैसे पहाड़ में ड्रिलिंग की जाती है फिर उसमें बारूद भरा जाता है — पहाड़ तोड़ने के लिए। बारूद की एक रस्सी किसी मशीन से जुड़ी थी। राजन ने नीला को वहाँ एक लीवर दबाने को कहा। नीला ने ज्यूंही उसे दबाया एक जोर के धमाके के साथ पहाड़ फटा और कोयले के पत्थर गिरे। इसे ब्लास्टिंग कहते हैं, ऐसे में सबको हटा दिया जाता है— इस समय कोई भी अनहोनी घट सकती है। ख़तरनाक काम होता है। धमाकों से पूरा पहाड़ हिल जाता है ,कहीं से भी पत्थर गिर सकते है —राजन ने समझाया। दो घंटे की अंधेरी सैर के पश्चात् जब ट्राली बाहर की रोशनी में पहुँची तो बीता समय एक ख्वाब सा लगा। बाहर की दुनिया के लोग कल्पना भी नहीं कर सकते कि 'कोयले' जैसी चीज़ भी कितनी कठिनाई से प्राप्त की जाती है। शाम को राजन के काम से आने पर नीला उससे नज़रें नहीं मिला पा रही थी। इसी तरह राजन की निगरानी में सब बच्चे अगले दिन एक पहाड़ी झरने के किनारे पिकनिक मनाने गए। खाना वगैरह उठाने के लिए चौकीदार साथ कर दिया गया था। रास्ते में चलते हुए

चुटकुले सुनाकर राजन सबका मनोरंजन कर रहा था कि अचानक उसने नीला का हाथ पकड़कर उसे एक चाबी का छल्ला पकड़ा दिया।उसे तेज घुमाने से 'आई लव यू' दिखाई देता था।प्रेम का इज़हार मुँह से न कहकर राजन ने छल्ले के माध्यम से आखीर कर ही दिया।नीला के मन में उथल –पुथल चल रही थी।आगे जंगल में एक चटट्ान पर अमरबेल लटक रही थी।चटट्ान बहुत बड़ी व चिकनी थी।राजन ने ऊपर चढ़ने का कार्यक्रम बनाया।सब एक के पीछे एक ऊपर चढ़ने लगे ।ऊपर बहुत बड़ा खुला मैदान देखकर सब अचम्भित हो गए।वहीं सब गोलाकार बैठ गए तो तृषा ने नीला से ज़िद की, 'दीदी कोई गाना सुनाओ'।जब सब जिद करने लगे तो नीला ने 'तुझे क्या सुनाऊं मैं दिलरूबा' एक फिल्मी गीत सुनाया।राजन गीत के बोलों से बाखूबी उसके इशारे समझ रहा था।दोनो तरफ आग बराबर लगी हुई थी।अंतत: राजन ने बाल मंडली को सहारा दे – देकर बेल के सहारे नीचे उतारा; पर नीला को रोक लिया।नीला का हाथ थाम कर वो चटट्ान पर से ऐसे फिसला कि सब समझे गिर रहे हैं।पर वे दोनो एक अनोखा आनन्द लूट रहे थे एक –दूसरे पर गिरकर।साँझ घिर आई थी सो सब वापिस घर को चल दिए ।

रात खाने के बाद नीला सौंफ लेने किचन स्टोर में गई और जैसे ही वापिस मुड़ी कि दरवाजे के पीछे से राजन ने अचानक उसके माथे पर कस के चुंबन लिया और एक झटके से गायब हो गया।अचानक हुई इस हरकत से नीला काँप उठी।उसका रोम –रोम मीठी सिहरन से भर उठा।जीवन में प्रथम चुम्बन! उसे क्या मालूम था कि इसका अनुभव इतनी मिठास लिए होता है।तभी आंटी की आवाज़ आई —'कहाँ रह गई नीला!' नीला ने झटपट माथे का पसीना पोंछा ,अपने को सँभाला और सौंफ लेकर बाहर आई।ख्यालों में खोई नीला बाहर लॉन में ज्यूं ही अपने बिस्तर पर जाकर लेटने लगी कि नीचे छोटे –छोटे कंकड़ चुभे—देखती है कि बिस्तर पर कंकड़ बिछे हुए थे।वह सब समझ गई।धड़कते दिल को हाथों से दबाए वो चुपचाप उसी पर लेट गई और कोई देख न ले ऐसे धीरे –धीरे कंकड़ नीचे फेंकती रही।सब की नज़रें बचाकर उसने भी आखीर राजन की ओर दो – चार कंकड़ शरारत से फेंक ही दिए व चाँद को अपना राज़दार बना उसी से बातें करती न जाने कब सो गई।राजन की छेड़खानियाँ बढ़ती ही जा रही थीं।हर रोज़ दोपहर को बालमंडली हॉल में ज़मीन पर दरी पर सोती थी।वह अपने पैर का अंगूठा उसके पैर में फँसाकर उसे स्पर्श देता।कभी छोटे से शीशे से उस पर चमक फेंकता।ऐसी ही शरारतों के बीच पता ही नहीं चला कब एक हफ्ता गुज़र गया।और वापसी आ गई।आज आखरी रात थी, दोनो की आँखों से नींद कोसो दूर चली गई थी।राजन ने रात को पढ़ते समय नीला को गुप्त संकेतों की भाषा सिखाई।दोनो पढ़ने के बहानेभविष्य में पत्र –व्यवहार का सिलसिला समझ रहे थे।कहीं माँ न आ जाए इस डर से नीला कुछ ठीक से समझ नहीं पा रही थी।राजन टेबल के नीचे उसका एक हाथ थामे ,ऊपर दूसरे हाथ से उसे समझा रहा था।अभी तक नीला खुलकर उसकी किसी भी छेड़खानी का उत्तर नहीं दे पाई थी।सुबह जब बिछुड़ने की घड़ी आई तब भी वह कुछ नहीं बोल पाई।अपनी मोटी – मोटी आँखों से उसे एकटक देखती उसकी आँखों में गहरे तक भीतर उतर गई।तभी राजन जोर से सब को सुना कर बोला कि वह मनेन्द्रगढ़ तक इनको छोड़कर शाम की गाड़ी से वापिस आ जाएगा।सब को ठीक ही लगा।नीला को तो मानो मुँह माँगी मुराद मिल गई।मनेन्द्रगढ़ में चार घंटे गाड़ी रूकनी थी।राजन तीनो बहनो को साथ लेकर घूमने निकला।बाजार से चूसने वाले पके आमों की टोकरी लेकर ये लोग वापिस लौटे।नीला जिस किसी आम को चूसती राजन सबकी आँख बचाकर वही आम उठाकर चूसने लगता।नीला डरकर देखती कहीं कोई देख तो नहीं रहा।पर सभी आम चूसने में मस्त थे।पहली

 ©Veena Vij - Tadap - Susha.doc

बार कोई उसका जूठा खा रहा था क्योंकि उनके परिवार में ऐसा चलन नहीं था। फिर भी उसका मन अजीब से अपनेपन से भर उठा। प्रत्युत्तर में उसने भी राजन का जूठा आम चूस लिया और लाज से भर उठी। माँ ने चाय मंगवाई। नीला ने एक घूँट पीकर ज्यूंही कप नीचे रखा राजन ने अपना कप उसकी ओर खिसका के नीला के कप से चाय पीनी शुरू कर दी। चुपके –चुपके बहुत सफाई से दोनो घुलते मिलते जा रहे थे। ये नई –नई घटनाएं नीला के भीतर उथल –पुथल मचा रही थीं। नीला अपनी गहरी झील सी आँखों से बोलती थी ,यही आँखें राजन के मन के भीतर गहरे में उतर उसे पागल बना देती थीं। इन मूक भावुक नज़रों का दीवाना ही तो हो गया था वह। समय को पंख लग गए थे। तभी उनकी गाड़ी आ पहुँची। राजन से विछोह — नीला गाड़ी के टॉयलेट में झट घुस गई। राजन से दूर, पर उसके करीब हो चुकी थी वो। थोड़ी देर बाद आंसू पोंछकर वापिस आकर चुपके से बैठ गई। गाड़ी बहुत आगे बढ़ चुकी थी।

घर वापिस आकर नीला खोई –खोई सी रहने लगी। राजन उसके दिलो –दिमाग पर छाया रहता था। वह पढ़ाई भी नहीं कर पाती थी। कोई जुदाई का गीत रेडियो पर सुनते ही उसकी आंखें छलक उठतीं। राजन को पत्र लिखने की हिम्मत वह नहीं जुटा पाई। तभी राजन का एक औपचारिक सा पत्र नीला के पिता जी को आया। पिछली ओर कुछ गिनतियां लिखी हुई थीं। पिताजी बोले कि लगता है ऑफिस में काम के रजिस्टर से पन्ना फाड़कर उसने सब को याद किया है। बात आई गई हो गई । अचानक शाम को नीला के दिमाग में राजन की सिखाई सांकेतिक भाषा का ख्याल आया। बाथरूम में जाकर वह धड़कते दिल से जोड़ – जोड़ कर पढ़ने लगी। वो नीला के नाम राजन का प्रेम– पत्र था। प्रथम प्रेम–पत्र! बंद कमरे में पढ़ते हुए भी वह काँपे जा रही थी। उसे लगा वह राजन के प्रेम से ओत– प्रोत हो गई है। उत्तर देने का साहस वह नहीं जुटा पाई। वह उस पत्र को प्रति दिन कई – कई बार पढ़ती। उसमें राजन का नीला के प्रति प्रेम समाया हुआ था, जिसमें वह खोई रहती। अभी कुछ दिन भी नहीं बीते थे कि अचानक एक दिन राजन आकर उनके सामने खड़ा हो गया। मीता ने दीदी का चेहरा भाँप लिया और छूटते ही बोली, 'आपको देखकर दीदी बहुत खिल गई है।'इस पर राजन से नज़रें मिलते ही नीला का चेहरा लाज से लाल हो उठा। राजन ने बताया वह किसी काम से आया है , कल लौट जाएगा।

राजन एक पल के लिए भी नीला को अपनी आंखों से ओझल नही होने दे रहा था। मौका लगते ही फुसफुसाकर बोला कि उसने पत्र का जवाब क्यों नहीं दिया। इस पर नीला ने उसे पूरी तरह अपनी आँखों में भरकर उसी के सामने आँख से दो मोती लुढ़का दिए । वह तड़प उठा। रात को सब के सो जाने पर उसने नीला के कमरे में जाकर सोई हुई नीला (जो सिर्फ आंखें बंद किए थी) के पैर को धीरे से हिलाया। नीला एकदम उठकर बैठ गई। राजन ने हाथ के इशारे से उसे बाहर बुलाया, पर वह उठ नहीं सकी। उसे डर था कहीं घर वालों का विश्वास न टूट जाए। राजन दोबारा भीतर आया और उसने बहुत सँभालकर उसे बाहों में उठा लिया। वह राजन की बाहों में सूखे पत्ते की तरह काँपने लगी। यहाँ तक कि उसके दाँत बजने लगे। हैरान हो राजन ने उसे उतारकर बाहर कुर्सी पर बैठाया व उसके कंधे जोर से पकड़कर बोला , 'क्या हुआ, सँभलो नीला!नहीं रह सकता मैं तुम्हारे बिना, मेरी जान'। किन्तु नीला का शरीर उसके बस में नहीं था। वह न चाहते हुए भी जोर –जोर से हिल रही थी। राजन ने प्रेम विभोर हो बहुत सँभलकर उसे प्यार किया। और कहा, ' जाओ मेरी जान! तुम्हारी मासूमियत ही तो मुझे जीने नहीं देती। तुम्हे देखने के लिए ही तो दौड़ा चला आया हूं। जाओ जाकर सो जाओ। पता नहीं तुम

से दूर कैसे रह पाऊंगा'। और वह पीछे हट गया। नीला एक आज्ञाकारी बालक की तरह काँपती हुई जाकर अपने बिस्तर पर दोनो टाँगें छाती से लगा कँपकँपी दूर करने का यत्न करती भोर होने तक जागती सोती रही।

दूसरे दिन, कई अनकही बातें मन में संजोए राजन जा चुका था। उसके भी पढ़ाई के दिन थे। वह भी पढ़ नहीं पा रहा था। उसके भविष्य का दारोमदार इसी परीक्षा पर निर्भर करता था। नीला की परीक्षा के लिए उसने अपने हाथों पेंट करके शुभकामनाओं का कार्ड भेजा। उस कार्ड की हर किसी ने प्रशंसा की। नीला ने कई बार 'थैंक्स' का पत्र लिखा, और हर बार फाड़ दिया। एक दिन पिताजी के कहने पर उसने उनके सामने ही 'थैंक्स' का पत्र लिख ही दिया। राजन को परीक्षा के लिए धनबाद बिहार जाना था। धनबाद जाते हुए वह रास्ते में एक दिन उनके पास रूका। नीला के लिए वह अपने हाथ से एक पोॅटरेट बनाकर फ्रेम कराकर लाया ,वह तस्वीर नीला से हूबहू मिलती थी। माँ ने तो देखते ही कहा कि लगता है हमारी नीला सपनों में खोई हुई है। सुनते ही राजन के चेहरे पर एक रहस्यमयी मुस्कान खेल गई। मानो उसकी कला सार्थक हो गई हो। नीला के चेहरे पर भी गर्वीली मुस्कान आ गई। राजन कुशाग्र बुद्धि था। बातों- बातों में एकाध चुटकुला सुना देता व सबका मन मोहे रहता। उसके जाने के पश्चात्...फिर वही उदासी! बारह दिनो में वह वापिस लौटा। आकर उसने नीला को जो बात बताई ; उसे सुनकर नीला को पैरों तले से ज़मीन खिसकती लगी। उसने बताया कि वह एक पेपर में शुरू से आखीर तक 'नीला ,नीला,नीला' ही लिखता रहा। और जब तक वह होश में आया , तब तक बहुत देर हो चुकी थी। वह अपने आप पर हैरान था। उस पर नीला का जुनून सवार था पर- - -इस हद तक !! उसे इल्म न था। राजन की बातें सुनकर व उसकी चाहत को इस हद तक पहुँची देखकर नीला डर से सिहर उठी। दो घंटे वहाँ रूक कर राजन चला गया। अब वह भी अपने भविष्य को लेकर परेशान हो उठा था। उसके जीवन के कई फैंसले इसी पर तो अटके थे।

दोनो परिवारों में नीला व राजन के प्यार का राज छुप नहीं सका। वे भी एक होने के सपने देखने लगे। दोनो परिवार इस जोड़ी को चाहने लगे थे। बस , राजन का रिज़ल्ट आने पर उसकी नौकरी वहीं तय थी। सीधे असिस्टेंट मैनेजर की पोस्ट! भला नीला के माता -पिता को क्या एतराज़ हो सकता था। राजन था ही इतना बुद्धिमान। आखीर बात चल ही पड़ी व खुशियां छाने लगीं। कि एक गाज गिरी— जिसमें सब ढह गया। नीला को यही डर था। जैसा कि वह दोनो जानते थे...राजन परीक्षा में असफल रहा। एक बार फेल होने पर तीन साल तक वह पुन: परीक्षा में नहीं बैठ सकता था। यही नियम था।

नीला और राजन के सपनो के महल रेत के घरौंदे की तरह पानी में बह गए। दोनो परिवारों ने एकदम चुप्पी साध ली। ये दोनो तड़प उठे थे। राजन अपने परीक्षाफल को अपनी ज़िदंगी का फैंसला मानने को तैयार नहीं था। उसके इश्क का जुनून उसे यहाँ लाकर छोड़ेगा उसने सोचा न था। वह हमेशा के लिए टूट गया.....पर यही सच था।

वीणा विज 'उदित'

©Veena Vij - Tadap - Susha.doc